तुलसी

(*Ocimum sanctum* or *Ocimum tenuiflorum*)

आयुर्वेदिक नाम	:	तुलसी
हिन्दी नाम	:	तुलसी
व्यवसायिक नाम	:	तुलसी
उपयोगी भाग	:	जड़, तना, पत्तियाँ एवं तेल
कुल	:	लेमियेसी

उपयोगः

खाँसी, जुकाम, बुखार, पाचन, त्वचा संबंधी विकारों में एवं हर्बल चाय में।

सामान्य परिचयः

भारत में तुलसी का पौधा धार्मिक और औषधीय महत्व का है, जिसकी महत्ता पुरानी चिकित्सा पद्वति एवं आधुनिक चिकित्सा पद्वति दोंनो में है। इसकी लगभग 150 प्रजातियॉ हमारे देश में पायी जाती हैं। इसकी प्रमुख प्रजातियॉ निम्न हैं:

(i) स्वीट बेसिल या बोलई तुलसी
(ii) कर्पूर तुलसी
(iii) वन तुलसी या रामा तुलसी
(iv) जंगली तुलसी
(v) श्री तुलसी या श्यामा तुलसी

आकारिकीः

ऑसीमम सैंक्टम एक द्विबीजपत्री तथा शाकीय औषधीय पौधा है। यह झाड़ीनुमा पौधा 1 से 2 फीट ऊँचा होता है। इसकी पत्तियॉ बैंगनी आभा वाली होती है जिनमें हल्के रोयें होते हैं। पत्तियॉ 1 से 2 इंच लम्बी, सुगंधित और अंडाकार होती है। इसमें पुष्पन शीतऋतु में होता हैं। सामान्यतः यह पौधा 2 ये 3 वर्षों तक हरा - भरा रहता है।

रासायनिक संगठनः

तुलसी में अनेक जैव सक्रिय तत्व पाये जाते है जिनमे टैनिन, सैवोनिन, ग्लाइकोसाइड और एल्केलाड्स सम्मिलित है। इसके अलावा इसमे 0.1 से 0.3 प्रतिशत तेल भी पाया जाता है। इस तेल में यूजीनॉल एवं कार्वाकोल पाया जाता है जो कि औषधीय रूप से बहुत ही महत्तवपूर्ण घटक है।

वितरणः

यह पौधा उष्ण कटिबंधीय एवं कटिबंधीय दोनों तरह की जलवायु में पाया जाता है।

भूमि एवं जलवायुः

इसकी खेती भूमि के लिए बलुई दोमट मिट्टी अधिक उपयुक्त होती है।

प्रवर्धनः

इसका प्रवर्धन बीजो एवं कंटिग्स द्वारा होता है, किन्तु यदि इसकी खेती करनी है तो बीजों द्वारा करना उचित होता है।

पौधशाला बनानाः

पौधशाला रोपाई के एक माह पूर्व बना लेना चाहिये। क्यारियों की लंबाई आवश्यकतानुसार एवं चौड़ाई 1.5 मी. होनी चाहिए तथा ये जमीन से 10 से.मी. ऊँची हों। एक एकड़ के खेत में 50 ग्राम. बीज की आवश्यकता होती है। कतार से कतार का फासला 10 से.मी. से कम न रखें, ऐसा करने से पौधे स्वस्थ रहते है।

खेत की तैयारीः

तुलसी की फसल लेने के लिये सर्वप्रथम मई माह में खेत की जुताई की जाती है। पौधों को खेत में लगाने से पहले खेत में 600 कि.ग्रा. गोबर खाद मिला देना चाहिये।

पौधो की रोपाईः

पौध, पौधशाला में चार सप्ताह की हो जाने के बाद रोपाई के लिये तैयार होती हैं। पौधशाला में पर्याप्त नमी होना चाहिये, ताकि पौध उखाड़ने में आसानी हो और जड़े सुरक्षित रहें। पौधो की जड़ो को साफ पानी से धो लेना चाहिये। रोपाई करते समय ध्यान रहे कि पौधे से पौधे की दूरी 1.2 मी. होना चाहिये। इस प्रकार लगभग 6944 पौधे प्रति हेक्टेयर लगाये जाते है। समय समय पर खरपतवार निकालना चाहिये तथा गुड़ाई भी करना चाहिए। इसकी खेती मे समस्त व्यय सहित लगभग 75 हजार से 88 हजार रूपये प्रति हेक्टेयर खर्चा आता है।

परिपक्व फसल

सूखी पत्तियॉ

बीज

संभावित उत्पादन

एक पौधे से उसके जीवनकाल मे निम्नानुसार तीन बार पत्तियों का विदोहन किया जा सकता है।

पौधों की संख्या प्रति हेक्टेयर (1.2मी.x1.2मी)	प्रति पौध न्यूनतम शुष्क पत्तियों का उत्पादन	कुल उत्पादन प्रति हेक्टेयर किलोग्राम में
6944	500 ग्राम	34.72
6944	600 ग्राम	41.66
6944	700 ग्राम	48.61

श्यामा तुलसी की पत्तियों का वर्तमान बाजार मूल्य लगभग रू. 65 प्रति किलोग्राम है। इसके अलावा इस पौधे से तेल भी प्राप्त किया जाता है। जिसके अलग–अलग बाजारों के मूल्यों में भिन्नतायें हैं।

ई–चरकऐप

- जड़ी बूटियों, सुगधित औषधियाँ, कच्चे माल एवं इनसे संबंधित जानकारी के लिये ई–चरक (ई–मंच) का उपयोग करे।
- यह ऐप एंड्रोइड मोबाइल, प्ले–स्टोर एवं गूगल पर भी उपलब्ध है।

औषधीय पौधो की कृषि तकनीक, प्राथमिक प्रसंस्करण एवं विपणन संबंधी अधिक जानकारी के लिये संपर्क करे।

क्षेत्रीय संचालक

क्षेत्रीय–सह–सुविधा केन्द्र (मध्यक्षेत्र)
राज्य वन अनुसंधान संस्थान, पोलीपाथर, जबलपुर–482008 (म.प्र.)
संपर्क: 0761–2665540, 9300481678, 9424658622 फैक्स: 0761–2661304
ई–मेल: rcfc_sfri817@rediffmail.com, sdfri@rediffmail.com
वेब: http://www.rcfccentral.org

तुलसी

**(*Ocimum sanctum*
or
Ocimum tenuiflorum)**

क्षेत्रीय-सह-सुविधा केन्द्र, मध्य क्षेत्र

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय, भारत सरकार

2020